308 127. HSS

विषय :- ये आँसू कब तक बहेंगे।

वो सफर अभी बहना शुरू किया है।

दिल्ली के रैलगाडी आ चुके थे। मैंने बहुत देर कर दिया था। इसिलिए भाग रहे थे वो रैलगाडी पकडने केलिए। और माँ बार बार परेशान करने केलिए फोन भी कर रहे थे। यहाँ रैलगाडी पकडने के जल्दी में फोन उठाने केलिए वक्त हो कैसे। एक बार नहीं दो बार नहीं पूरे पाँच बार। दौडने के जल्दी में अनजाने में मैं एक बूढे औरत को धक्का दिया। वो एक बहुत बूढे औरत थे एक गठरी भी साथ लेकर आ रहे थे। मैंने जल्दी बोला 'माफ़ कीजिए माँ' और उसने तभी मुझसे पूछा की, "बेटा दिल्ली में जानेवाली रैलगाडी कब तक आयेगी?" वो तो वही रैलगाडी थी जिसमें मुझे चढना था। मैंने जल्दी बोला की वो तो आ चुके हैं और जल्दी रैलगाडी पकडने केलिए दौडा। भगवान की कृपा से रैलगाडी मिली। जब रैलगाडी निकलनेवाला था मेरे पास वाली सीट में वो बूढी औरत आकर बैठ गयी। वो कुछ सोच रहे थे। और आँखों में से पानी भी आ रहे थे।

①

हमारी होस्टल की छुट्टी के दिन थे। सिर्फ एक महीने। इसके बाद दसवीं कक्षा की पढ़ाई शुरू होनी है। घर जाने को बिलकुल मन नहीं था। वहाँ दोस्तों के साथ मस्ती करेंगे, यही तय हुआ था। पापा ने कहा था की घर आने की जरूरत नहीं है। लेकिन माँ बार बार परेशान कर रहे थे। मेरा दम घुट रहा था। इसीलिए घर जाने की फैसला की। कभी कभी तो ये माँ का व्यवहार मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। माँ अब भी मुझे एक छोटा बच्चा समझकर रखा है। लेकिन अब क्या मैं एक छोटा बच्चा हूँ? पंद्रह साल का लड़का हूँ। इसलिए माँ का ऐसा चिंता होना मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता।

फिर मैं उस बूढ़ी औरत पर ध्यान दिया तो पता चला की वो बहुत ही रो रहे थे। मेरा मन था की उससे पूछूँ की बात क्या है। लेकिन कैसे? वो मुझे अच्छे से जानती तक नहीं। फिर कैसे। लेकिन फिर भी मैंने उससे पूछा की, "माँ आप रो क्यूँ रहे हैं" लेकिन उसने कुछ नहीं बोला। बस रो रहे थे। फिर मैं ने बैग से फोन निकालकर

गाना सुनने लगा। फिर कुछ समय बाद वो खुद ही बोलने लगा की, बेटा मुझे भी एक बेटा है अब वो किसी बड़े कंपनी में काम करते हैं। पढ़ने में बहुत अच्छा था। असल में उसके पापा उसको सात साल की उम्र में मर गये। फिर घर की सारी ज़िम्मेदारियाँ मेरे ऊपर आयी। लेकिन एक अनपढ़ गवार औरत करती भी क्या? मैं कुछ घरों की रसोई के काम करके उसको पढ़ाया, लिखाया, अब इतनी बड़े इनसान बनाया, उसको काम मिलने के बाद घर के सारे ज़िम्मेदारियाँ उसने ले लिया, और मैंने काम करना भी बंद कर दिया। उसके बाद वो खुबसूरत सा पाँच साल बीत गया। वो मुझे बहुत प्यार करते थे, मैं भी इसको अपने जान से ज़्यादा प्यार करते थे। मैं बूढ़ी होती चले गये। मैं बूढ़ा होना लगा। फिर रमेश ने अपने साथ काम करनेवाली किसी लड़की से प्यार करने लगा, और अब शादी की तैयारियाँ चल रहे हैं।

पिछले महीने मैं उस लड़की के पापा से मिला। जब मैंने उससे बोला की मैं रमेश की माँ हूँ तब वो मुझसे कहा की रमेश ने यही कहा था की उसको

माँ और पापा दोनों नहीं है। वो दोनों मर चुकी है। असल उसी ही वक्त में मर गया। अब तो सिर्फ एक ज़िंदा लाश हूँ। इस बारे में मैंने रमेश से पूछा तो उसने मुझसे यही कहा की एक अनपढ गवार औरत को अपनी सासु माँ कहती मुझे मेरी बीवी को शरम आते है। लेकिन इस अनपढ गवार औरत के बेटे से शादी करने में तो उसको शरम नहीं आया। पता नहीं क्या बेटा को क्या करूँ। लेकिन मन में ये फैसला ले रखा था की बेशरम होकर उस घर में जीऊँगा तो नहीं।

सच में बेटा, बचपन से लेकर आज तक मेरी आँख से ये आँसू बहती ही रही, बचपन में गरीबी के वजह से, फिर अपनी पती खोने के वजह से और अब रमेश ने भी .... ये आँसू तो रुकने के नाम ही नहीं लेता। अब और भी कितने बहेंगे ये पता नहीं। अब तो मेरे मरने तक ये आँसू ऐसे ही बहती रहेंगी। इतनी कहकर अगले स्टेशन में ही वो औरत निकल गया लेकिन सिर्फ उस रैलगाडी से, मेरे मन में

(4)

एक बड़ा सा तूफान देकर वो चली गयी। असल में उस औरत का वो बहता हुआ आँसू मेरी जीवन का एक अगला मोड था।

सच में तभी मुझे पता चला की मेरी घर में भी ऐसा एक इनसान है, जिसके आँसू कभी न बहनने की नाम नहीं लेती। मेरी माँ, वो भी एक छोटे से गाँव की एक सीधी सादी लड़की थी, एक अनपढ़ सिर्फ प्यार का ही मतलब समझ में आनेवाली एक बेचारी औरत। और मेरी पापा एक बड़ी सी कंपनी की मैनेजर थी। सच वो शादी मेरी दादीजी का ज़िद थी। पापा को माँ बिलकुल पसंद नहीं था। लेकिन माँ पापा को अपना सबकुछ मानकर रखा भी था। दस साल तक मैं घर में था। मैंने वहीं रहकर अपनी पढ़ाई की है। फिर पापा ने मुझे होस्टल भेज दिया। दस साल तक मैं माँ को लाडला था। लेकिन माँ से पापा का व्यवहार हमेशा मुझे गुस्सा दिलाती थी। मैंने कभी भी पापा को माँ से प्यार से बात करते हुये न देखा। पापा हमेशा से ही माँ से नफ़रत करता था। गुस्सेवाली नज़र से ही वो माँ को देखती है।

मैंने कई बार माँ से पूछा माँ क्या की अगर पापा को आप इतनी पसंद नहीं है तो आप ये बंधन तोड़ क्यूँ नहीं देते। लेकिन माँ जवाब हमेशा यही था की, चाहे तेरे पापा इस रिश्ते को न मानें, लेकिन मेरे लिए ये सब कुछ है। ये तेरे बाबाजी का सपना था। मैंने उनसे वादा किया था की चाहे कुछ भी हो जाये, तेरे पापा मुझसे नफ़रत करें या मुझसे गुस्सा करें या कुछ भी हो जाये मैं तेरे पापा का साथ और हाथ कभी नहीं छोड़ूँगी। बेटा तुम ये सिंदूर देख रहे हो ना, ये मेरे लिए अपना सब कुछ है। ये मेरे जीने का वजूद है। ये वही शक्ति है जो मुझे तेरे पापा से जोड़कर रखे, बेटा, रिश्ते तोड़ना बहुत आसान है, लेकिन इसे जोड़कर रखना बहुत मुश्किल।

जब भी पापा ड्रिंक ज़्यादा करें या गुस्सा हो जायें, माँ कुछ भी नहीं कहती थी, बस चुपचाप खड़ी रहती है। दस साल तक मैं माँ के बहुत करीब था, उनका लाडला था मैं। लेकिन कहीं न कहीं पापा का डर था की

माँ के साथ रहकर मैं माँ के तरह न बन जाऊँ। इसलिए पाँचवी कक्षा के बाद पापा ने मुझे होस्टल भेज दिया। माँ ने पापा को मनाने की बहुत कोशिश की, लेकिन वो न मानी। पापा के ज़िद के वजह से मैं होस्टल चली गयी। धीरे धीरे मेरे और माँ के बीच की दूरियाँ बढ़ने लगी। मैं माँ से दूर होने लगी। मेरी सारी दोस्तों की माँ बड़ी बड़ी कंपनियों में काम करती थी, सिर्फ मेरी माँ ही.....
इसलिए जब भी माँ का फोन आती थी दोस्तों से कहीं छुपकर बात करती थी। मैंने उन सब से यही झूठ बोला की मेरी माँ लंडन की एक बड़ी कंपनी में काम करती है। सच में माँ का फोन मेरे लिए एक परेशानि खड़ी कर दी, कहीं माँ की बोलने की तरीखा सुनकर मेरी दोस्तों को पता न चल जाएं की वो एक अनपढ़ औरत है। इसीलिए मैंने माँ से यही बोला की अब परीक्षा शुरू होने के कारण होस्टल में फोन करना मना है। फोन करकर हमेशा यही पुछता है की बेटा तुमने खाना खाया, अच्छे से नहाना, नहाकर अच्छे से बाल धोना आदी आदी। धीरे धीरे मैं माँसे नफ़रत करने

लगा। इस छुट्टी के बारे में पता नहीं कैसे माँ को पता चला। वो मुझको घर आने को ज़िद करने लगी। इसीलिए परेशान होकर मैंने घर जाने को फैसला की।

पता नहीं अब इस औरत से मैं न मिला तो ये सब मैं कैसे समझ पाती। अगर रास्ते में वो औरत मुझे नहीं मिला तो मेरी माँ का आँसू ऐसे ही बहता होगा। पता नहीं माँ से मैं कैसे बात करूँगी, अपनी बेटे से ही इनकार सुनने वाली एक माँ की हालत कैसे होगी। ये सब सोचते सोचते मेरी स्टेशन कब आ गया पता भी नहीं चला। मैं जल्दी ही गाड़ी से निकलकर एक रिक्शा पकड़ा। मैं घर के बाहर खड़ा था। पता नहीं किस मुँह से अंदर जाऊँ। पता नहीं फोन से किस तरीखे से मैंने माँ से बात की है। जो भी हो अंदर चलना ही तो होगा। मैं सोचा उसके कमरे में गया। माँ कमरे में नहीं है। फिर तो वो रसोई में ही होगा। रसोई में जाकर देखा तो वो मुझे खिलाने केलिए मेरी पसंद की चीज़ें बना रही है। मुझे देकर ही वो मेरे पास दौड़कर आया और बोला, "बेटा,

तुमने तो कुछ भी नहीं खाया होगा, आओ मैंने सब तुम्हारे पसंद की चीज़ें बनाया हैं। ये लो पहले खीर खाओ, तुम्हें बहुत पसंद है ना" इतनी कहकर माँ मुझे खीर खिलाने लगी। मेरी आँख से आँसू बस ऐसी ही बहने लगी। मेरे अंदर का वो सागर धीरे धीरे बहते हुये बाहर निकला। उस आँसू निकलने के बाद मुझे इतना सुकून मिला जितने पहले कभी नहीं मिला। एक सागर की तरह वो बहने लगी। माँ मुझसे पूछा की बेटा तुम रो क्यूँ रहे हो? मैंने बोला, वो आँख में कुछ चली गयी है। फिर उसके आँख से भी एक एक मोती छूटने लगी। मैं जल्दी खाना खत्म करकर अपने कमरे में गया। माँ भी काम काज कर कर बाहर पापा इंतज़ार में बैठे थे। मैंने एक बार नीचे आकर देखा तो, माँ के आँख से आँसू निकलती जा रही है। लेकिन पहली बार वो दुख की नहीं खुशी की आँसू थी।

हमारे ज़िंदगी से भी दुख का वो आँसू अपनी सारी दुख लेकर चली गयी। अब सिर्फ खुशी के आँसू ही बहना बाकी है। और अब धीरे धीरे वो

भी बरसने लगी। वो कहती है
चाहे कितना भी तेज़ हो अंधकार
रोशनी के आना तो तय है लेकिन उसके बाद
और माँ की ज़िंदगी में भी ऐसे ही मेरी
उस बहता आँसू के बीच में दुख का सूरज
का नई सागर लेकर आ ही गया। अब हमारी खुशी
ज़िंदगी में खुशी की वो आँसुएं
बहना शुरू किया है। और अब वो
आँसू ऐसे ही बहते चले जायेंगे.....।